विषय

मेरी 7 दिनों के गांव की यात्रा का अनुभव

अंजू लता
(शोध छात्र)
जीवन पर्यटन शिक्षा और विस्तार विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर उत्तर प्रदेश
डॉ अंशू सिंह
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
जीवन पर्यटन शिक्षा और विस्तार विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर उत्तर प्रदेश

यह गांव है उत्तर प्रदेश का हरिनासाथ,जिला आजमगढ़ तहसील मोहम्मदाबाद गोहाना पोस्ट धौरहरा। मेरा इस गांव को भ्रमण करने का उद्देश्य यहां की पृष्ठभूमि और यहां का रहन-सहन के बारे में पता लगाना था कि वाकई यह गांव एक गांव की अनुभूति देता है या आधुनिकता के प्रभाव में इसका भी अस्तित्व लुप्त हो रहा है।

प्रथम दिन 5 नवंबर 2024

मैं इस गांव में सुबह तकरीबन 7:00 बजे पहुंची । यहां माहौल अत्यधिक खुशनुमा, खुशनुमा इसलिए कि कल छठ मैया की पूजा होनी है इसलिए काफी चहल पहल है और हरियाली से भरा क्योंकि चारों तरफ धान की खेती लह लाहा है रही है। फिर करीब 9:00 बजे का समय था मैंने कुछ

देर विश्राम किया फिर एका-एक नींद खुली तो गांव के एक घेरे में छोटे-छोटे बच्चे खुद की पाठशाला लगाकर अपना पाठ जोर जोर से याद कर रहे थे नींद खुल चुकी थी, इसलिए मैं गांव के भ्रमण पर निकल पड़ी मैं जहां रुकी थी उस घर से 10 कदम की दूरी पर ही एक प्राइमरी स्कूल था मैंने अंदर जाकर उसे स्कूल का अवलोकन करना चाहा फिर कुछ झिझक सी महसूस हुई कि शायद मेरी भाषा और उनकी भाषा एक दूसरे के संवाद को समझने में मुश्किल पैदा करें पर ऐसा हरगिज नहीं हुआ क्योंकि यहां का स्टाफ काफी मित्रवत ढंग से मुझसे मिला फिर मैं यहां के प्रधानाचार्य से मुलाकात की जहां उन्होंने बिना संकोच व संदेह सारी चीजे बताई। स्कूल का संचालन तो ठीक है यहा मिड डे मील योजना का भी बखूबी अनुसरण किया जा रहा है। आने वाले बच्चे खुश हैं। पढ़ाई भी बेहतर है कुल मिलाकर और जगह के प्राइमरी स्कूलों की तुलना में इस स्कूल को मैं 10 में से 8 अंक दूंगी। स्कूल का जायजा लेते ही मुझे 1:00 बज गया। इसके बाद 1-2 के बीच मैं खाना खाया और कुछ देर विश्राम किया। गांव के शांतिप्रिय माहौल में कब आँख लग गई मुझे खुद भी पता नहीं चला I शाम 5:00 बजे मेरी नींद खुली तो चाय पीने का मन हुआ गांव वालों से पता चला कि शाम के नाश्ते के लिए भातकोल चट्टी (मार्केट) जाना पड़ेगा।

इस गांव से मात्र 1 किलोमीटर की दूरी पर यह चट्टी थी जहां एक मंदिर भी है। वहां पहुंचकर मैंने देखा की बहुत अच्छी दुकाने थी खाने पीने की और कुछ फास्ट फूड के भी स्टाल लगे हुए थे जो मुझे हैरान करने वाले थे, एक ब्यूटी पार्लर भी था लेकिन सिर्फ नाम का मेडिकल स्टोर, किराना स्टोर, बीज भंडार, कपड़े लत्ते की दुकान, सब्जी फल सब कुछ उपलब्ध था परंतु चाय पकौड़ी घाटी के लिए मैंने वहां भीड़ देखी वह एक टूटी

फूटी दुकान क्या चबूतरा जैसा था और वहां एक बुजुर्ग व्यक्ति जो उसके मालिक है नाम है भीरा अपनी प्रसिद्ध घाटी व पकौड़ी छान रहे थे मैं भी वही जाकर बैठ गई फिर मैंने पकौड़ी जो की ₹50 में 250 ग्राम थी ली और यकीन मानिए ऐसा स्वाद मैंने कभी नहीं चखा थाI और घाटी तो बिल्कुल पेट भराऊ चीज थी। न सिर्फ पकौड़ी व घाटी इनकी मिठाई में भी गजब का स्वाद था और सस्ती इतने के शहर में जितना दाम 250 ग्राम मिठाई का होगा यहां उतने में 1 किलो मिल जाएगी ।

यहां का स्वाद इतना हावी हो गया मन और पेट दोनों पर कि मैंने पेट भर नाश्ता ही कर लिया। लोगों से बातचीत के द्वारा पता चला कि यहां हर बुधवार को यहां बाजार लगती है नॉनवेज किI मैं जब तक वहां से लौटी तब तक शाम के 7 बज चुके थे और गांव से सन्नाटा पसरा गया था क्योंकि समय हो गया था यहां पर लोगों के सोने का इसलिए मैं भी आकर सो गई। यहां पर लोगों के स्वस्थ रहने का एक राज यह भी है कि यहां सोने का समय बहुत जल्दी और जागने का समय भी बहुत जल्दी है।

द्वितीय दिन 6 नवंबर 2024

सुबह 6:00 बजे मैं उठी जो शायद काफी देर था क्योंकि मैं सुबह के 4:00 बजे से ही लोगों की हलचल सुनी लोग खेतों में काम करने लगे थे, शौचालय घर-घर होने के बाद भी लोग सुबह खेतों में जाना पसंद कर रहे थे क्योंकि उनका मानना है कि सुबह इसी बहाने ताजी हवा मयस्सर हो जाती है मैं भी करीब 7:00 बजे चाय पी और निकल पड़ी चट्टी चौराहे का जायजा लेने वह इसलिए कि माहौल छठ पूजा का है। पूरी भातकोल चट्टी फल बाजार से पूरी भरी पड़ी है यहां सबसे हैरान करने वाली बात मुझे यह लगी कि जहां शहरों में तीज-त्योहार पर फल रोजाना

की अपेक्षा दोगुना दाम में बिकने शुरू हो जाते हैं यहां रोज के भाव से कम भाव में बिक रहे थे । फल मालिकों से पूछने पर की जो सेब का भाव कल तक 150 रुपए किलो था वह आज 120 और कहीं-कहीं तो ₹100 किलो दिया जा रहा है ऐसा क्यों? तो उन लोगों का जवाब था कि मैडम यह एक बहुत बड़ा व्रत त्यौहार है जो हर स्तर के व्यक्ति पूजते हैं यदि फल सस्ता ना हुआ तो गरीब वर्ग कैसे खरीदा पाएगा। इसलिए हम लोग वाजिब दाम लगा लेते हैं कि सभी खरीद सके और इसका आशीर्वाद छठ मैया हम लोगों को भी दे देंगी फिर मैं भीरा अंकल के यहां घाटी खाई और गांव लौट आई उस वक्त करीब 12 बज चुके थे।

दोपहर 2:00 बजे गांव में कुछ लोग भीख मांगने वाले आए जो की काफी अच्छे कपड़े पहने हुए थे और पढ़े लिखे थे लेकिन घर-घर भिक्षा ले रहे थे उनसे पूछने पर पता चला कि यह लोग संत गुरु रविदास समुदाय से हैं, और तकरीबन गांव के सभी सदस्य उनको भिक्षा दे रहे थे किसी में दुत्कार की भावना नहीं थी। मैंने यह भी देखा कि आर्थिक स्थिति बहुत निम्न होते हुए भी दान भिक्षा देने में कोई झिझक या गुस्सा नहीं दिखाते जैसा हम शहर वासी अक्सर दुत्कार देते हैं। शाम 4:00 बजे मैं चबूतरे पर बैठकर कुछ सोच ही रही थी कि मुझे अकेला देख कर दो महिला मेरे पास आई और मेरे व मेरे परिवार के बारे में पूछने लगी। मैं एक शादीशुदा महिला हूं तो अपने-अपने पतियों के बारे में कुछ देर चर्चाए चली, कुछ हंसी ठिठोली हुई फिर कुछ महिलाएं बकरी चराने जा रही थी वह भी हम लोगों के पास आकर बैठ गई वह समय उनके फुर्सत का नहीं था फिर भी केवल मेरे लिए उन महिलाओं ने अपना समय मुझे दिया और यह पल भी मुझे सुकून दे गया फिर शाम 5:30 बजे तक सबके पति व बच्चे काम से लौट आए और महिलाएं भी घर चली गई शाम 6:00 से

7:00 बजे के बीच यहां खाना खा लिया जाता है और 7:30 बजे तक सो जाते हैं सभी लोग।

तृतीय दिन 7 नवंबर 2024

सुबह 6:00 बजे, ठंड की शुरुआत हो गई जिसका ऐसा मुझे गांव की सुबह करा रही है। यहां मेरी नींद बच्चों की पढ़ाई से ही खुलती है जो खुद की ही पाठशाला लगाकर पढ़ते हैं। आज गांव में रोज के मुकाबले काफी खामोशी है जिसकी वजह महिलाओं का छठ पूजा का व्रत है इस बीच मुझे एक किसान परिवार जिनका नाम नरमु है से मुलाकात करने का मौका मिला जो सुबह करीब 7:00 बजे से ही अपने खेतों में आलू चुकंदर बो रहे थे उनकी सहायता से मैंने भी आलू बोने का अनुभव प्राप्त किया। यह मेरे लिए एक सुखद अनुभव था क्योंकि इससे पहले मैं खेतों में कुछ बोना तो दूर खेतों से कुछ साग-सब्जी भी नहीं तोड़ी थीI फिर मैं 10:00 बजे तक इस परिवार के साथ ही रही।

दोपहर 12:00 बजे में खेतों की चक रोड पर टहलने निकली तो वहां एक काली मां का मंदिर दिखा। मुझे पुराने मंदिर काफी आकर्षित करते हैI इसलिए मैं वहां गई गांव वालों से पता चला कि यह उनकी कुलदेवी का मंदिर है और काली मां सिर्फ इस गांव के लोगों की दुआ कबूल करती है यहां लोग अपनी मुराद पूरी कर होने पर खस्सी (बकरी) की बलि देते हैं और कढ़ाई चढ़ाते हैं जिसमें आटे का हलवा और पूडी होती है। अब यह मंदिर काफी अच्छा बन गया है जिसकी वजह लोगों को पूरी होती मन्नते है। करीब 5:00 बजे मुझे आमंत्रित किया गया कि छठ पूजा के लिए आप भी घाट पर आइए, फिर क्या मैं भी सज धज कर घाट पर जाने को तैयार हो गई मैंने वहां देखा कि गड़ई (पोखरा) में कुछ पुरुष गन्ने को

गाड़ रहे थे जिसके ऊपर नई साड़ी बांधी हुई थी यह साड़ी छठ मैया के लिए भेंट है जो कि बाद में घर की सबसे बड़ी महिला पहनती है फिर महिलाएं इकट्ठा होकर गीत गाने लगती हैI गीत मेरी समझ से तो परे था पर फिर भी उसे गीत की लय ऐसी थी कि मैं उसमें रम गई। इस कार्यक्रम को पूरा होते 7 बजकर 20 मिनट हो गया जो काफी देर थाI फिर सभी अपने घर चली गई और मैं भी लौट आई।

चतुर्थ दिन 8 नवंबर 2024

मैं सुबह देर से उठने की आदि हूं यहां पर तीन दिन ही गुजरे हैं और मेरी नींद खुद ब खुद 6:00 बजे खुल जा रही है सुबह उठते ही ऐसी हरियाली, पेड़-पौधे, साफ और शुद्ध हवा मिल रही है कि जो कि शहर में तो एक सपना है मैं जब टहलने निकली तो देखा छठ पूजा का समापन कार्यक्रम हो रहा था और वह भी सुबह के 4:00 बजे से पानी में रहकर मुझे तो यह सुनकर ही कपकपाहट होने लगी थी इस व्रत के बारे में मैंने सिर्फ सुना था पर आज यह आंखों देखा अनुभव प्राप्त किया तो जाना की यह सचमुच एक कठिन व्रत है जो कि मेरे बस के तो बिल्कुल ही बाहर है सुबह 7:00 बजे मैं फिर पहुंची भीरा अंकल की दुकान सुबह के नाश्ते के लिए यहां कुछ लोग कौतूहल वश होकर मुझे देखते हैं लेकिन पुरुष होने के नाते मुझसे बात नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता है कि मैं उनकी भाषा नहीं समझ सकूंगी।

सुबह 8:00 बजे मैं चट्टी से पैदल ही गांव लौटी गांव आकर मैंने देखा कि कई लोग बोरी में अनाज ला रहे हैं मैंने उनसे पूछा तो पता चला कि यह लोग "प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना" का लाभ उठा रहे हैं फिर

क्या आज का दिन मेरी इस योजना पर बात करते हुए निकल गया यह एक ऐसी योजना है जो गरीब परिवार को बहुत हद तक लाभ प्रदान कर रही है। इस योजना से उनका आर्थिक मदद भी प्राप्त हो पा रही है यहां कुछ घर ऐसे भी है जहां सिर्फ वृद्ध है वह कोई काम नहीं कर सकते तो उनके लिए यह योजना वरदान साबित हो रही है फिर मैं करीब 3:00 बजे फरीदपुर गांव पहुंची जहां यह अनाज का वितरण होता है यकीन मानिए इतनी पारदर्शिता मैंने तो कहीं नहीं देखी थी वितरण केंद्र पर खुद ही अनाज भरना था और तौल मशीन पर खुद तौलना था जिसमें अनाज चोरी का सवाल ही नहीं उठता। यहां देने वाला भी खुश और लेने वाला भी यह सरकार की ऐसी योजना है जो निसंदेह लोगों को लाभान्वित कर रही है ठीक 5:00 बजे मैं वहां से लौटी गांव का ही एक लड़का था प्रदीप नाम का उसने मुझे छोड़ दिया और इसी के साथ मेरी आज के दिन की यात्रा समाप्त हुई।

पंचम दिन 9 नवंबर 2024

आज के दिन की शुरुआत इतनी मनोरम नहीं थी सुबह करीब 5:00 बजे दो घरों के बीच उग्र भाषा का प्रयोग करते हुए किसी विषय पर बातचीत हो रही थी पूछताछ करने पर पता चला कि एक परिवार शौचालय बनवाना चाह रहा है और दूसरा परिवार रोक रहा है और दोनों की अपनी अपनी वजह हैं ।

करीब 8:00 बजे मैंने भी अपने सुबह के कार्य पूरे किए और बाहर चबूतरे पर बैठ गईI कुछ देर धान की कटाई अच्छी जहां मशीन ना बुलाकर के महिलाएं खुद ही काट रही थी और साथ-साथ घर की छोटी बच्चियाँ भी सुबह 9:10 पर एक फेरी वाला जिसने प्लास्टिक के समान लिए हुए था

आता है विजेंद्र बो यहां किसी का की पत्नी को पुकारने या उसके बारे में बात करने के लिए उसे पति के नाम के आगे बो लगाते हैं जिसे पता चलता है कि उस व्यक्ति की पत्नी की बात हो रही है उसे रूकवाती है और कुछ सामान खरीदती है। सामान के बदले वह पैसे ना लेकर इसे धान लेता है उसे फेरी वाले को पैसे चाहिए ही नहीं हुए धान के बदले समान बेचता है। लेनदेन का यह ढंग मुझे अजीब भी लगा और अच्छा भी विजेंद्र बो धान भी पूरा नहीं दिया यह कहकर कि मैं आज कोठली (धान रखने की टंकी) नहीं खोल सकती क्योंकि आज मेरे यहां मान है। मान एक ऐसा दिन होता है जिसमें घर के पुरुष की मृत्यु हुई होती है महिला इसमें शामिल नहीं है और यह तब खत्म होता है जब घर में कोई लड़का पैदा होता है यदि लड़की हुई तो मान बरकरार रहेगा। करीब 11:00 बजे मैं गांव की एक लड़की मालती से मिली जिसकी उम्र 28 साल है मैंने उससे भी जानना चाहा कि यह मान क्या है, तो उसने बताया कि यदि इस दिन किसी काम की शुरुआत करेंगे तो अच्छा नहीं होगा यात्रा करेंगे तो वह भी कष्टप्रद होगी कोई शुभ कार्य इस दिन नहीं किया जाता। फिर वह अपना धान काटने चली गई और मैं खाना खाने मेरी नींद खुली ठीक 3:00 बजे दोपहर में फिर कुछ गांव की महिलाएं मुझसे बात करने आयी और अपने-अपने परिवार की मजाकिया बातें साझा करके चली गई क्योंकि 4:00 शाम को उनकी बकरियां चर-कर वापस आ जाती है चार पांच बजे का समय मेरा भातकोल मोड़ पर गुजरता है क्योंकि मैं चाय के बगैर नहीं रह सकती और इस चट्टी की चाय तो जैसे जन्नत। यकीनंन मेरा वजन यहां 6-7 किलो बढ़ जाएगा शाम 7:00 बजे तक यहां गांव सो जाता है।

षष्ठम दिन 10 नवंबर2024

ठंड बढ़ रही है इसलिए आज मैं सुबह 7:00 बजे उठी सुबह से ही गाना बजाना हो रहा था काफी शोर शराबा था गांव में पता चला आज गांव में एक बारात आएगी। एक और गुट भी था जहां लड़के की शादी थी यहां सबसे अच्छी बात यह लगी की शादी से जुड़ी हर रस्म में इसके लिए न्योता आ रहा था पूरे विधि विधान से शादी हो रही थी फिर 10:00 बजे मैं देवलास के मेले के लिए निकल पड़ी गांव से करीब 5 किलोमीटर दूर बहरामपुर मे देवल बाबा का मंदिर है जहां छठ के बाद तकरीबन 10 दिनों तक भयंकर मेला लगता है मेले में घुसते ही साँसे ऊपर की ऊपर ही रह गई मेरी इतनी भीड़ थी लेकिन मेल ऐसा की जरूरत का हर सामान मौजूद वहां मैंने एक अजब मिठाई देखी जिसको खाजा बोलते हैं वह एक रोटी से भी बड़े आकार का होता है जिसमें खोया भरा होता है और ₹100 में एक मिलता है इसके अलावा मूंग दाल की पकौड़ी और जलेबी गुड़ व चीनी दोनों की बनी बिकती हुई जगह-जगह आप लोगों को दिख जाएगी यहां भी गांव के सभी लोग देवल बाबा के थान जाकर कढ़ाई चढ़ाते हैं कढ़ाई चढ़ाने का मतलब हलवा और पूरी जो कि वही उनके थान पर ही जाकर बनाई जाती है उसको चढ़ाया जाता है यह कार्य लोग अपनी श्रद्धा से करते हैं किसी प्रकार की मनौती होना जरूरी नहीं। देवलास के मेले में दिन कब खत्म हो गया पता ही नहीं चला शाम 5:00 बजे लौटने के बाद गांव में भोजपुरी गानों की धुन सुनाई दे रही थी वजह थी बारात। बारात करीब 8:00 बजे तक आई खेतों में ही बारात बुलाई गई। बारात के साथ बाराती एक ऐसी चीज भी लाए जो शायद लुप्त ही हो

गई थीI वह थी नौटंकी–नाच। जय माल के बाद इन लोगों का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें यह लोग हंसाते भी हैं और रुलाते भी यह एक नाटक होता है जो रात भर चलता है और लोगों को बांधे रखता है ऐसे आधुनिक समय में इस प्रकार के नाटक देखने के लिए भी भारी भीड़ उंमड़ी थी। जिसमें हर आयु वर्ग के लोग शामिल थे यह नजारा मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था।

सप्तम दिन 11 नवंबर 2024

गांव में आज मेरा अंतिम दिन है इस एक सप्ताह में मैं गांव के लोगों की जीवन उनकी संस्कृति देखीI यहां प्रत्येक व्यक्ति का जीवन कठिनाइयों से भरा है लेकिन यहां रहने वालों की खुशी सच्ची है। यहां के लोगों में दिखावा नहीं है, जीवन बिल्कुल सादा है। बच्चे वही धूल माटी में खेल रहे हैं उन्हें कोई खिलौना नहीं चाहिए, कोई फोन नहीं चाहिए, कोई फास्ट फूड नहीं चाहिए वही दाल भात खाकर ही वह शहर के बच्चों से ज्यादा तंदुरुस्त है। गांव छोड़ते हुए मन तो बहुत भारी है। इस यात्रा में मुझे जीवन का एक नया दृष्टिकोण दिया है मुझे लोगों के प्रति उदार रहने के भाव सिखाएं कम संसाधनों के बीच खुश रहना सिखाया।

इस गांव की यात्रा से इतना सुखद अनुभव प्राप्त करके जा रही हूं कि आगे भी किसी अन्य गांव की यात्रा करना चाहूंगी क्योंकि गांव की सादगी शहर की आधुनिकता से बहुत बेहतर है।